बदलते सामाजिक परिवेश में मुसहर समुदायः एक शैक्षिक-सामाजिक अध्ययन

Musahar Community in Changing Social Scenario: An Educational-Social Study

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ से
शिक्षाशास्त्र विषय में
डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच० डी०) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध सारांश

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

शोधार्थी

अवनीश कुमार

नामांकन संख्याः 1408/19

सह शोध निर्देशक

प्रो0 हरिशंकर सिंह

शोध निर्देशक

प्रो0 अरबिंद कुमार झा

शिक्षाशास्त्र विभाग
शिक्षाशास्त्र विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) (NAAC A++ Accredited)
विद्या विहार, रायबरेली रोड,
लखनऊ–226025 (उ०प्र०) भारत

2024

शोध सारांश

1.01 प्रस्तावना

शिक्षा समाज में ज्ञान, जागरूकता और विकास का माध्यम होती है। शिक्षित व्यक्ति समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखते है, जैसे नए विचार, व्यक्ति की योग्यता और कौशल में वृद्धि, नई तकनीकी, और सामाजिक सुधार के साथ समाज के प्रति योगदान करते है। शिक्षा समाज की संरचना, संस्कृतियों तथा मूल्यों को प्रभावित करती है तथा उन सामाजिक मुद्दों को समझने में मदद करती है जिसका समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संविधान में शिक्षा को मूल अधिकार के रूप स्वीकार किया गया है। यह विकास एवं प्रगति का एक महत्वपूर्ण अंग है जो व्यक्ति को सशक्त बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाती है। शिक्षा व्यक्ति के आलोचनात्मक विवेक को जागृत करती है। इन भूमिकाओं में शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण बन चुकी है। इस संबंध में भारतीय सरकार ने अपने नागरिकों की बेहतर शिक्षा और उसके गुणवत्ता के लिए समय-समय पर विभिन्न समितियों का गठन करने के साथ ही अनेक प्रावधान भी बनाए हैं, जिससे देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित हो और अपने साथ-साथ देश का विकास कर सके। परंतु सरकारों द्वारा बनाए गए प्रावधानों और दी जा रही विभिन्न प्रकार की सुविधाओं के बावजूद यह भी देखने को मिलता है कि समाज के कुछ वर्ग शिक्षा के क्षेत्र में अति पिछड़े या उससे वंचित हैं। शिक्षा वर्तमान समय में एक बहुयामी के रूप में देखी जा सकती है क्योकि जो व्यक्ति अपने को जिस स्तर तक शिक्षित कर रहा है वह अपनी आवश्यकता को उसी स्तर तक आसानी से प्राप्त कर रहा है। अतः शिक्षा व्यक्ति के विकास के लिए एक अनिवार्य लक्षण बन चुकी है। सरकार भी अपने नागरिकों के लिए शिक्षा को मुक्त एवं सर्वसुलभ बना दी है जिससे देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित हो और अपने साथ देश का विकास कर सके। किन्तु सरकार के अथक प्रयास के बाद भी कुछ समुदाय आज भी आर्थिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए है। जनगणना 2011 के अनुसार 'भारत की कुल जनसँख्या का 74.04 प्रतिशत जनसंख्या ही साक्षर हो सकी है' यदि शिक्षा की गुणवत्ता की बात की जाय तो यह संख्या और भी कम हो जाएगी। जब शिक्षा में पिछड़ने के कारणों को देखा गया तो अलग-अलग समुदाय के अलग-अलग कारण देखने को मिलते है। देश में ऐसे बहुत से समुदाय है जो शिक्षा के क्षेत्र में हाशिए पर बने हुए है जिनकी आज भी साक्षरता दर 25 प्रतिशत से कम है। जब तक यें समुदाय शिक्षा की

मुख्यधारा में शामिल नहीं हो जाती तब तक देश का विकास संभव नहीं है। इन्ही समुदायों में से मुसहर समुदाय जो देश की अनुसूचित जाति के अंतर्गत आती है जो बदहाली दयनीय स्थिति में जीवन जीने को मजबूर है। यह समुदाय किसी तरह प्राथमिक शिक्षा तक अपनी पहुंच तो बना रही हैं, लेकिन किन्ही कारणों से स्कूली शिक्षा या माध्यमिक शिक्षा से वंचित हो जाते हैं या नामांकन होने के कुछ ही समय में ड्राप-आउट हो जाते हैं। कुमार, (2014) ने अपने शोध अध्ययन में यह बताया कि ‘महादलित विशेषकर प्राथमिक स्तर एवं उच्च प्राथमिक और माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक प्रत्येक स्तर पर विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के कारण विद्यालय छोड़ देते हैं’। यह लक्षण मुसहर जाति में परिलक्षित होती है। पाण्डेय, (2013) ने अपने अध्ययन में ‘मुसहर समुदाय की शैक्षिक स्थिति में- 70 प्रतिशत अशिक्षित बताया है’। नारायण (2002) ने अपने अध्ययन में ‘मुसहर समुदाय में शिक्षा का स्तर शून्य और साक्षरता दर छ: प्रतिशत से नीचे बताया है’। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मुसहर समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने योग्य नहीं है या उनके सामाजिक परिवेश के अनुरूप न होने के कारण उनकी रुचि नहीं है यह विमर्श करने योग्य है। कुमार, (2015) ने ‘मुसहर समुदाय की साक्षरता दर कम होने के पीछे उनके व्यक्तिगत एवं सामुदायिक कारण को बताया है’। कुमार, (2006) ने ‘मुसहर समाज के एक लोकगीत के माध्यम यह बताने का प्रयास किया है कि मुसहर समुदाय शिक्षा के प्रति एक सकारात्मक अभिवृति रखते है’ प्रश्न यह है कि मुसहर समुदाय में शिक्षा का स्तर निम्न क्यों है या उनकी शिक्षा में रूचि होने बाद भी वें इतने पिछड़े क्यों है? क्या वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मुसहर समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार नहीं है जिसके कारण इनकी शिक्षा बाधित हो रही है। जबकि एन. सी. एफ. (2005) के राष्ट्रीय फोकस समूह के सामाजिक विज्ञान का शिक्षण में विविधता और स्थानीय विषय वस्तु में यह कहा है कि ‘प्रासंगिक स्थानीय विषय-वस्तु, पठन-पाठन प्रक्रिया का हिस्सा होना चाहिए, जिनका शिक्षण स्थानीय गतिविधियों के साथ अध्ययन अध्यापन किया जाना चाहिए’। इस प्रकार जब विद्यालयों में शिक्षण कार्य बच्चों के वास्तविक परिवेश से जोड़कर किया जाएगा तो बच्चें उस शिक्षण में रूचि, जिज्ञासा एवं कल्पना कर सकेगे और सीखने में आनंद का अनुभव करेगें। त्रिपाठी, (2003) ने अपने लेख ‘मुसहर समाज और शिक्षा’ में यह बताने का प्रयास किया है कि स्कूलों में हो रहे शिक्षण कार्य मुसहर समाज के परिवेश से अलग होने के कारण इस समाज के बच्चों के लिए शिक्षा उदासीन हो जाती है। मुसहर समुदाय समाज की मुख्यधारा से वंचित रह गयी है जो अपना जीवन तंगी और बदहाली की स्थिति में जीने के लिए मजबूर है। जहां समाज के अन्य समुदाय अपने

को विकास की ओर अग्रसर कर रहे है, वही मुसहर समाज अपने मूलभूत सुविधा रोटी, कपड़ा और मकान की व्यवस्था करने के लिए संघर्ष कर रहा है।

1.02 शोध समस्या

बदलते सामाजिक परिवेश में मुसहर समुदाय: एक शैक्षिक-सामाजिक अध्ययन

Musahar Community in Changing Social Scenario: An Educational-Social Study

1.03 संक्रियात्मक परिभाषा

I. **बदलते सामाजिक परिवेश:** बदलते सामाजिक परिवेश का अभिप्राय सामाजिक परिवर्तन अथवा सामाजिक बदलाव से है. अर्थात समाज में मुसहर समुदाय की पूर्व में क्या स्थिति थी, वर्तमान में क्या है और क्या परिवर्तन आ रहे है।

II. **मुसहर समुदाय:** भारत सरकार तथा सचिव समाज कल्याण अनुभाग संख्या 3483/26-3/2003(7)/03 के द्वारा अनुसूचित जातियों में 55वें नंबर पर स्थान प्राप्त व्यक्ति समूह से है।

III. **शैक्षिक सामाजिक:** प्रस्तावित शोध में शैक्षिक सामाजिक का आशय समाज, शिक्षण संस्थान और शिक्षार्थी के मध्य होने वाली प्रक्रिया से है जो निम्नलिखित है-

- विद्यार्थी शिक्षण संस्था से जुड़कर संस्था के उद्देश्य एवं लक्ष्य को सीखता है।
- शैक्षिक और गैर शैक्षिक गतिविधियों में प्रतिभाग के दौरान सीखता है.
- अन्य विद्यार्थियों के साथ,कक्षा में, खेल के मैदान एवं छात्रावास में रहकर सामंजस्य स्थापित करना सीखता है।
- शिक्षक तथा गैर शिक्षक कर्मचारी से वार्तालाप करना सीखता है।
- समाज एवं परिवार में रहकर उसके मूल्य, उद्देश्य एवं संस्कृति को सीखता है।

1.04 शोध का लक्ष्य

प्रस्तुत शोध में मुसहर समुदाय के शिक्षा में पिछड़ने के कारणों का पता लगाना, शिक्षा में उनकी स्थिति तथा गुणवत्ता की पहचान करने, शिक्षा की नीतियों के प्रति इनके भिज्ञता तथा सूचनाओं के माध्यमों की पहचान करना है। यह समुदाय किसी तरह प्राथमिक शिक्षा तक अपनी पहुच तो बना पा रहा है लेकिन किन्ही कारणों से आगे की शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहा है। क्या शिक्षा उनके जीवन के लिए उपयोगी नहीं

है? या उनके अनुरूप शिक्षा नहीं है, किन कारणों से यह जाति आगे की शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रही है उन कारणों को पहचान करना ही इस अध्ययन का लक्ष्य है।

1.05 **शोध प्रश्न**

1. शिक्षा के प्रति मुसहर समुदाय के क्या दृष्टि कोण है?
2. शिक्षा के प्रति मुसहर समुदाय की क्या अपेक्षाएं है ?
3. मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव क्या है?
4. मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभव किस प्रकार के है?
5. मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधियों में भागीदारी की गुणवत्ता कितनी है?
6. मुसहर समुदाय की शिक्षा की सरकारी योजनाओं के प्रति क्या भिज्ञता है?
7. मुसहर समुदाय की शैक्षिक समाजीकरण की प्रक्रिया किस प्रकार से हो रही है?

1.06 **शोध उद्देश्य**

1. शिक्षा के प्रति मुसहर समुदाय के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. शिक्षा के प्रति मुसहर समुदाय के अपेक्षाओं का अध्ययन करना।
3. मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभवों का अध्ययन करना।
4. मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभवों का अध्ययन करना।
5. मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधियों में भागीदारी और उनकी गुणवत्ता का अध्ययन करना।
6. मुसहर समुदाय की शिक्षा की सरकारी योजनाओं के प्रति भिज्ञता का अध्ययन करना।
7. मुसहर समुदाय की शैक्षिक समाजीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।

1.07 **शोध विधि-** प्रस्तुत शोध अध्ययन 'बदलते सामाजिक परिवेश में मुसहर: एक शैक्षिक-सामाजिक अध्ययन' में मुसहर समुदाय के सामाजिक यथार्थ तथा उनके शैक्षिक बोध का अध्ययन के लिए नृजातीय पद्धति का प्रयोग किया गया है।

1.08 **जनसंख्या एवं न्यायदर्श-** प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिदर्श का चयन सोद्देश्य प्रतिदर्शन पूर्ण (purposive sampling) के आधार पर उत्तर प्रदेश के वाराणसी मंडल का चयन किया। वाराणसी मंडल के सम्बंधित जिलों के रूप में वाराणसी, चंदौली, जौनपुर तथा गाजीपुर सम्मिलित है। उपरोक्त जिलों में

मुसहर समुदाय की जनसंख्या की बहुलता तथा जीवन की बदहाली स्थिति के आधार पर गाजीपुर जनपद का चयन किया गया। गाजीपुर जनपद में गाजीपुर, सैदपुर, जखनियां, जमनियां, मुहमदाबाद, काशिमाबाद तथा सेवरी कुल सात तहसील तथा 16 ब्लाक है। जिला निर्वाचन योजना गाजीपुर- 2009 के अनुसार- जखनियां तहसील में अनुसूचित जाति की जनसंख्या गाजीपुर के अन्य तहसीलों की तुलना में सबसे अधिक होने के कारण जखनियां तहसील का चयन किया गया। अध्ययन के लिए दो ऐसे गांव का चयन किया गया जहां एक गांव ऐसा हो केवल मुसहर समुदाय के लोंग रहते हो तथा एक ऐसा गांव जहां इस समुदाय के साथ अन्य समुदाय के लोंग भी रहते है। इस उद्देश्य के साथ गांवों की तलास करने अधिक दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि अध्ययन के लिए न्यायदर्श, समय, धन तथा संसाधन महत्वपूर्ण होते है जो अध्ययन को प्रभावित करते है। तहसील जखनियां का क्षेत्र भ्रमण किया और मुसहर समुदाय के जनश्रुति जनसंख्याकीय आकड़ें के आधार पर मंझंनपुर मदरा, पनिश्का, अतिगावां, कनुवाने, खानपुर रघुवर राय, शाहपुर बहोर राय, आदि गांवों का भ्रमण किया। भ्रमण के उपरांत एक गांव अतिगावां तथा दूसरा गांव- शाहपुर बाहेर राय का चयन किया गया।

1.09 **शोध उपकरण-** प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संग्रहण के लिए शोधकर्ता ने शोध निर्देशक के निर्देशन में स्व निर्मित शोध उपकरण तैयार किया। अध्ययन के लिए शोध उपकरण के रूप में असंरचित साक्षात्कार अनुसूची, फोकस समूह चर्चा (FGD), फिल्ड नोट एवं अवलोकन शोध उपकरण के रूप में प्रयोग किया।

1.10 प्रदत्त का विश्लेषण

संकलित प्रदातों को विश्लेषित करना एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। प्रदत्त संग्रह कर लेने के बाद उसको व्यवस्थित रूप में लिखने के लिए निम्नलिखित चरणों का उपयोग किया गया-

प्रथम चरण- इसमें साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से प्रयोज्यों के कथनों को कोड (S1, S2….., P1, P2…..T1, T2….तथा R.) के साथ एक सारणी में लिखा गया। जहां S= विद्यार्थी (Student), P= अभिभावक (Parents), T= शिक्षक (Teacher) और R= शोधकर्ता (Researcher) से है।

द्वितीय चरण- इस चरण में फोकस समूह साक्षात्कार (FGD) और अवलोकन के प्रदत्तों को अक्षर्सः अर्थात प्रत्येक शब्द, वाक्य और पैराग्राफ को लिखा गया। इसके पश्चात मूल कथनों का गहनता के साथ अध्ययन कर उनको साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त प्रदत्त को जोड़कर उसे एक विशेष रंग के माध्यम कोड प्रदान किया।

इस प्रकार प्रथम चरण के प्रदत्त को पृष्ट के बाएँ (left) तरफ और द्वितीय चरण के प्रदत्त को दायें (Right) तरफ लिखकर उसका विश्लेषण किया गया। इस प्रकार प्रत्येक उद्देश्य के सभी विश्लेषण की सहायता से निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचा गया। अंत में सभी उद्देश्य प्रश्नों के निष्कर्षों से एक सामान्य निष्कर्ष पर पहुंचा।

1.11 शोध का महत्त्व

प्रस्तुत शोध 'बदलते सामाजिक परिवेश में मुसहर समुदाय: एक शैक्षिक सामाजिक अध्ययन' समाज को एक नया ज्ञान प्रदान करेगा। समाज को मुसहर समुदाय की वर्तमान स्थिति का पता चल सकेगा और शिक्षा में यह समुदाय अपने को कितना विकसित कर पाई है और उनके सम्मुख क्या-क्या समस्याए आ रही है आदि का पता चल सकेगा। सरकार द्वारा उपलब्ध शैक्षिक योजनाएँ और प्रावधान में मुसहर समुदाय की पहुँच या जानकारी के आभाव में उन योजनाओं और प्रावधानों से वंचित रह जा रही है का पता चल सकेगा। भविष्य में शैक्षिक योजनाओ के निर्माण में इस समाज को ध्यान में रखकर नीति निर्धारण करने में देश को एक आधार मिल सकेगा।

1.12 शोध का औचित्य

मुसहर समुदाय केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं बल्कि बिहार, उड़ीसा, बंगाल, या कहे तो पूर्वी उत्तर भारत में पाई जाती है। इस समुदाय की सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति दयनीय रही है शारीरिक श्रम ही उनकी आजीविका का मूल स्त्रोत रहा है यह जाति प्रारम्भ से ही समाज में अछूत और हीन भावना से देखी जाती रही है। वर्तमान समय में मुसहर समुदाय अनुसूचित जाती की श्रेणी में आती है। अनुसूचित जाति में सुधार लाने के लिए भारतीय संविधान में विभिन्न अनुच्छेदों का प्रावधान किया गया है और समय-समय पर इसकी शैक्षिक, सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए अलग से कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा है। सरकार द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं का लाभ अनुसूचित जाति की कुछ ही जातियां उठा पाती है

परंतु मुसहर समुदाय आज भी निचले पायदान पर है। जनगणना (2011). के अनुसार- साक्षर की श्रेणी में उत्तर-प्रदेश के मुसहर अनुसूचित जाति में निचले तीसरे स्थान पर है जिसकी साक्षरता दर 24.4 प्रतिशत है। अब तक जितने भी मुसहर समुदाय को लेकर शोध कार्य हुए है उनमे शोधकर्ता को बिहार के मुसहर, नेपाल के मुसहर और मुसहर को अन्य जातियों के साथ लेकर शोध काम हुआ है, जिसमें मुसहर समुदाय की शैक्षिक स्थिति की बात करे तो सिंह, (2005) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इनमे साक्षरता दर पांच प्रतिशत और औपचारिक शिक्षा के रूप में पुरुष तीन प्रतिशत, महिलाओं में शून्य प्रतिशत है। नारायण, (2002) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इनमे साक्षरता दर छः प्रतिशत से कम है। कुमार, (2015) के अध्ययन से पता चलता है की इस जाति में साक्षरता दर 15.1 प्रतिशत है। शाह, (2016) के अध्ययन से ज्ञात होता है की इस समुदाय में ज्यादातर बच्चे कुपोषण के शिकार होते है। इन्ही उपरोक्त कारणों को ध्यान में रखकर प्रस्तावित शोध विषय पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया गया है जिससे मुसहर समुदाय की शैक्षिक सामाजिक स्तर का पता चल सके तथा भविष्य में प्रदत्त आकड़ों के आधार पर सरकार द्वारा इसके उत्थान के लिए उचित कदम उठाये जा सके।

1.13 शोध का परिसीमन

प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश में गाजीपुर जनपद के जखनियां तहसील के अंर्तगत दो गाँव को लेकर अध्ययन किया गया है। निश्चित रूप से दो गाँव के अध्ययन से सभी मुसहर समुदायों की शैक्षिक सामाजिक स्थिति को नहीं समझा जा सकता, फिर भी एक समुदाय, अलग-अलग जगहों पर क्यों न बसे हो उनमें कुछ समानताएं रहती है। इस प्रकार मुसहर समुदाय के शैक्षिक-सामाजिक को समझने के लिए यह अध्ययन महत्वपूर्ण है।

1.14 अध्ययन के मुख्य परिणाम एवं निष्कर्ष

उद्देश्य 1- शिक्षा के प्रति मुसहर समुदाय के दृष्टिकोण

शिक्षा के प्रति मुसहर समुदाय के दृष्टिकोण को जानने के लिए मुसहर अभिभावक अपने बच्चों के नामांकन हेतु विद्यालय का चुनाव किस प्रकार से करते है? बच्चों को विद्यालय भेजने की प्रवृति किस प्रकार की है? विद्यालय से आने वाली चुनौतियों का समाधान किस प्रकार से करते है? पैरेंट्स टीचर मीटिंग

(पीटीएम) में चर्चा के मुद्दे क्या है? शिक्षा में बच्चे की स्थिति क्या है? आदि की पहचान की गई, जिसके परिणाम निम्नलिखित है-

अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि अधिकांश मुसहर अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के लिए विद्यालय के चयन का आधार सरकारी सुविधाओं का लाभ तथा विद्यालय से घर की दूरी को बनाते है। अर्थात अपने बच्चों को ऐसे विद्यालयों में प्रवेश को प्राथमिकता देते हैं जहाँ उन्हें सरकारी सुविधाओं का अधिक से अधिक लाभ मिल सके तथा विद्यालय घर से निकट हो। इस प्रकार वे अपने बच्चें की शिक्षा के लिए सरकारी विद्यालय का चुनाव करते है। अध्ययन के दौरान इस समुदाय से केवल तीन ऐसे विद्यार्थी मिले जो गैर सरकारी विद्यालय में पढ़ने जाते थे। इनके अभिभावकों ने अच्छी शिक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखकर अपने बच्चों के लिए गैर सरकारी विद्यालय का चुनाव किया था। मिश्र, (2015) ने भी अपने अध्ययन में पाया है कि 'जब अभिभावकों को अपने बच्चों की शिक्षा के संबंध में निर्णय लेना होता है तो ये अपने शैक्षिक अनुभवों के आधार पर निर्णय लेते हैं। उनके अनुभव शैक्षिक विकल्पों के चुनाव करने के साथ-साथ शैक्षिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी को प्रभावित करते है'।

यह समुदाय पूर्ण रूप से मजदूर वर्ग है, ये कहते है कि समय के अभाव में अपने बच्चों को विद्यालय छोड़ने तथा उन्हें लेने नहीं जा पाते। अवसर मिलने पर भी इन कार्यों के लिए उनमें किसी प्रकार की सक्रियता देखने को नहीं मिली। जिसके कारण उनके बच्चों के साथ यातायात से सम्बंधित दुर्घटना, रास्तें में आते-जाते कुत्ते के काटने की घटना, बीच रास्ते से विद्यालय न जाकर कहीं और चले जाना आदि समस्याएं घटित होती थी।

अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि मुसहर अभिभावक विद्यालय से शिक्षा को लेकर आने वाली चुनौतियों (शिक्षण सामग्री, गृह कार्यों में अभिभावक का सहयोग) में पूरी तरह सहयोग करने में असमर्थ थे। इन चुनौतियों के समाधान के बजाय अभिभावक उन्हें समय या भगवान के ऊपर छोड़ दे रहे थे। मिश्र, (2015) ने बताया कि 'कमजोर शैक्षिक पृष्ठभूमि को अभिभावक अपनी हीनता के तौर पर देखते है। उनकी यह हीनता का भाव शिक्षा प्रक्रिया के भागीदार के रूप में उनकी स्थिति को कमजोर करता है'।

चयनित दोनों सरकारी विद्यालयों में पैरेंट्स टीचर मीटिंग के उद्देश्य से कभी कोई कार्यक्रम आयोजित नहीं हुआ था। शिक्षकों का अभिभावकों से किसी शैक्षिक कार्य को लेकर मिलना हो जाता था,

उसे ही पैरेंट्स टीचर मीटिंग के रूप में लिया गया। इसके लिए नियोजित तथा व्यवस्थित प्रयास का अभाव देखने को मिला। लगभग आधे अभिभावकों को पैरेंट्स टीचर मीटिंग के बारे में कोई जानकारी नहीं थी कि इसका आयोजन कब होता है। एक भी मुसहर अभिभावक ने बच्चें के सीखने-सीखाने जैसे मुद्दों को लेकर कभी शिक्षकों से संपर्क नहीं किया। एन.सी.एफ. (2005) में इस बात का उल्लेख किया गया है कि विद्यालय, समुदाय को अपने परिसर में बुलाकर बाहरी संसार को पाठ्यचर्या की प्रक्रियाओं को प्रभावित करने में एक भूमिका दे सकता है।

शिक्षा में मुसहर समुदाय के बच्चों के स्थिति के सन्दर्भ में अपने बच्चों का नामांकन माध्यमिक स्तर और उससे ऊपर नहीं करवाने वाले सात अभिभावकों ने अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति को जिम्मेदार बताया। इनके सामाजिक परिवेश, बच्चों को लम्बे समय तक शिक्षा से जुड़े रहने की अनुमति नहीं देती। आर्थिक समस्या होने के कारण बच्चों के शैक्षिक खर्च ये वहन नहीं कर पाते और कर्ज की भरपाई करने के लिए बच्चों को कमाने के लिए बाहर भेज देते है। किसी भी स्तर की सरकारी नौकरी की अनिश्चितता के कारण अभिभावक शिक्षा को विशेष महत्त्व नहीं देते। गाँव अतिगावां के अधिकांश मुसहर विद्यार्थी जिस रूप में घर पर रहते थे उसी दशा में विद्यालय चले आ रहे थे। उनके अभिभावक अपने बच्चों को तैयार करके विद्यालय भेजने के प्रति उदासीन थे। नारायण, (2002) ने बताया कि 'आधारभूत आवश्यकताओं में भारी कमी तथा अभिप्रेरणा की कमी मुसहर बच्चों को शिक्षा से दूर करती है। मात्र एक स्नातक डिग्री धारक का कहना है कि यहाँ तक (स्नातक) की शिक्षा भी उसके जीवन में इच्छित परिवर्तन नही ला सकी'। सहाय, (2019) ने अपने अध्ययन में बताया कि 'मुसहर अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय भेजने का प्रयास नहीं करते, वे अक्सर अपनी विडंबना और लाचारी में कहते है कि विद्यालय भेजना समय और उर्जा की बर्बादी है'।

अभिभावक अपनी लड़कियों की सुरक्षा को लेकर अधिक चिंतित थे। इस कारण दो अभिभावकों ने कक्षा-7 तथा कक्षा-8 में पढ़ने वाली लड़कियों की शादी कर देना उचित समझा। विचारणीय है कि दोनों गाँवों से एक भी बालिका माध्यमिक स्तर की शिक्षा में नामांकित नहीं थी। अभिभावकों के कथन (देखे S19, P25 पेज सं. 94, P16 पेज सं.110) को मुसहर बालिकाओं की शिक्षा के प्रति प्रमाण के रूप में देखा जा सकता है। जिसमें अभिभावक की विवशता, सामाजिक रूढ़िवादिता और सामाजिक कुरीतियाँ

परिलक्षित होती है। आज भी इस समुदाय में बाल विवाह खुले तौर पर देखा जा सकता है और यह तब हो रहा है जब लड़कियों की शादी करने की उम्र बढ़ाने की बात हो रही है। पंडित, (2024) के अनुसार 'भारत सरकार द्वारा बालिकाओं की शादी करने की उम्र 18 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष करने की बात लोक सभा सदन में रखी गई'। कुन्नाथ, (2013) ने अपने अध्ययन में बताया कि मुसहर अपनी लड़कियों की शादी कम उम्र में इसलिए कर देते है ताकि वह उच्च जाति के पुरुषों का शिकार न बन सकें।

उपरोक्त प्रकरणों को प्रमाण के रूप में देखते हुए यह कहा जा सकता है कि मुसहर अभिभावकों की नजर में शिक्षा गौण स्थान रखती है और बालिका शिक्षा की स्थिति दयनीय है।

उद्देश्य 2- शिक्षा के प्रति मुसहर समुदाय की अपेक्षाएं

शिक्षा के प्रति मुसहर समुदाय की अपेक्षाओं को जानने के लिए अभिभावकों के जीवन में आने वाली समस्याओं तथा समस्या की पुनरावृति न हो उसके लिए उठाए जाने वाला कदम, अभिभावकों के क्या रोजगार/ व्यवसाय है तथा इसके पीछे का कारण, व्यक्तित्व के सन्दर्भ में अभिभावकों के इच्छित बच्चे, बच्चों की शिक्षा के लिए अभिभावकों की योजनाएं, शिक्षकों की कार्य शैली और अभिभावकों की अपेक्षाएं आदि की पहचान की गई जिसके परिणाम निम्नलिखित है-

सभी मुसहर अभिभावक एक ऐसे परिस्थिति में पले बढ़े हैं जहां असमानता न केवल विद्यमान है बल्कि प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। उन्होंने अपने जीवन में आर्थिक समस्याओं का सामना किया और अधिकांश अभिभावक अभी भी कर रहे हैं। इसके साथ ही उनकी कुछ और भी समस्याएँ हैं जैसे- घर पर बच्चों की शिक्षा में कोई सहयोग न कर पाना, कर्ज में जीवन यापन करना, पैसे के आभाव में उचित चिकित्सा न दे पाना आदि। जो समस्याएं मुसहर अभिभावकों ने अपने जीवन में उठाई और उठा रहे है यह समस्या उनके बच्चों के साथ न हो इसके लिए आधे से अधिक अभिभावकों ने अपने बच्चों को शिक्षित करने का मार्ग चुना और उपरोक्त समस्याओं के निराकरण के लिए शिक्षा से अपेक्षा की।

मुसहर समुदाय के अधिकांश लोगों का कार्य ईट भट्ठे पर मजदूरी करना था। इस बात की पुष्टि 27 अभिभावक में से 21 अभिभावकों के द्वारा हुई जबकि चार अभिभावकों ने दैनिक मजदूरी, बन्नी-मजूरी के रूप में पुष्टि हुई। वर्तमान समय में इस समुदाय का प्रमुख कार्य ईट भट्ठे पर मजदूरी कार्य करना मुख्य पेशा

बन गया है। ये कहते है कि अशिक्षित होने के कारण ईट भट्ठे पर मजदूरी करते हैं लेकिन माध्यमिक तथा स्नातक की शिक्षा लेने के बाद भी ईट भट्ठे पर मजदूरी के लिए लोग गए थे। मिट्टी से जुड़े कार्यों जैसे सड़क बनाना, तालाब तथा कुएं खोदना, ईट पाथने के लिए मिट्टी तोड़ना आदि में इस समुदाय को प्रवीणता हाशिल है और ये लम्बे समय से इन कार्यों में लगे हुए है जिसका प्रभाव आज भी इनमे देखने को मिलता है। मजदूरी के रूप में पुरुष तथा महिलाएं दोनों कार्य करते हैं चाहे वह कृषि कार्य हो या भट्ठे पर मजदूरी का कार्य हो। निश्चित लम्बे समय तक तथा पुरुष और महिला दोनों को कार्य मिलने के कारण ईट भट्ठे पर मजदूरी करने को प्राथमिकता देते हैं।

अपने बच्चे को किस तरह का व्यक्ति बनाना चाहते हैं के प्रति एक तिहाई अभिभावक अपने बच्चे को सरकारी नौकरी करवाने की अपेक्षा रखते थे। जिसमें शिक्षक, सिपाही, नेवी, विदेश जाना (कमाने के उद्देश्य से) तथा सफाई कर्मचारी जैसी नौकरियों से अपेक्षा शामिल थी। अधिकांश अभिभावक बच्चे को उनके भाग्य के ऊपर छोड़ना, अपनी मूलभूत आवश्यकता को पूरा करने योग्य और कही पर भी कमा-खा सकें आदि की अपेक्षा रखते थे। कुछ अभिभावक बच्चें को क्या बनाना है इसकें बारे में कुछ सोचें नहीं थे। लगभग आधे (14 अभिभावक) अभिभावकों का मानना था कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था इनके उम्मीदों को पूरा करने योग्य नहीं है, कारण के रूप में बताया कि इस शिक्षा व्यवस्था से इन्हें किसी प्रकार का रोजगार उपलब्ध नहीं हो रहा है। पैसे के आभाव में माध्यमिक स्तर की शिक्षा से भी वंचित हो जा रहे हैं। नारायण, (2017) ने भी अपने अध्ययन में बताया कि 'मुसहर समुदाय की आवश्यकता, इच्छा, और जरूरतों को मुखर समाज और सरकार तय करती है'।

शिक्षा से अपेक्षाओं का स्तर मुसहर अभिभावकों के शैक्षिक परिवेश के ऊपर निर्भर था, जिस परिवार में जितनी ऊँची शैक्षिक योग्यता वाले व्यक्ति थे उसी के अनुपात में अपने बच्चे से उस स्तर के शिक्षा की अपेक्षा थी। अपने बच्चों की शिक्षा के लिए कुछ अभिभावकों ने पूर्व से कोई न कोई योजना हुयें थे। जिसमें बच्चे को किस स्तर तक शिक्षा देनी है, उनकी शिक्षा के लिए पैसे का संचय करना, किस विद्यालय में नामांकन करवाना है जैसी योजनाएं शामिल थी। लेकिन इस समुदाय का एक बड़ा हिस्सा अपने बच्चे की शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार के शैक्षिक योजना के बारे में कोई विचार नहीं किया। यह उनकी शिक्षा के प्रति उदासीनता को दर्शाता है। इस समुदाय में लड़कियों के ऊपर सामाजिक दबाव तथा अन्य

समाज से भय देखा गया। एक उद्धरण- P1 की आर्थिक स्थिति दयनीय थी। पत्नी की इलाज के लिए 70 हजार का कर्ज परिवार के ऊपर पहले से था लेकिन परिवार लड़की की शादी करना आवश्यक समझा। जबकि लड़की अभी कक्षा-7 की छात्रा थी। उल्लेखनीय है कि शादी के बाद लड़की कभी विद्यालय नहीं गई और कर्ज के बढ़ते दबाव के कारण भाई अपनी पढ़ाई को गौण प्राथमिकता देते हुए ईट भट्ठे और टेंट हाउस पर काम करना पड़ा और विद्यालय का शुल्क भुगतान न कर पाने की दशा में 10वीं की बोर्ड परीक्षा से वह वंचित रह गया।

अध्ययन से पता पता चला कि शिक्षकों के काम-काजी क्षमता (कार्य शैली) से 26 में से आठ अभिभावक संतुष्ट नहीं थे, कारण के रूप में उनके कार्यों के प्रति उनकी गैर जिम्मेदारी, अभिभावकों से किये गए वादे को पूरा न करना आदि शामिल था। शिक्षक के कार्य शैली से 12 अभिभावक संतुष्ट थे तथा तीन अभिभावक कोई अन्य विकल्प नहीं होने तथा कार्य शैली का औसत स्तर होने स्वीकार किये। शेष तीन इसके बारे में अभिज्ञता व्यक्त किए। शिक्षा के सम्बन्ध में सरकार से कुछ अभिभावकों ने अपेक्षा की थी कि उनके बच्चों को उनकी शैक्षिक योग्यता के अनुरोप उन्हें नौकरी दें और शैक्षिक योजना की व्यवस्था करें तथा उसकी पड़ताल करें। शिक्षा के सम्बन्ध में विद्यालय से अभिभावकों ने यह अपेक्षा की थी कि उनके बच्चे पढ़-लिख सकें तथा किताबों में जितना दिया गया उसको जान सकें, बच्चे को नौकरी पाने योग्य शिक्षा मिले, जीवन की बाधाओं को दूर करने योग्य बन सकें और कमजोर विद्यार्थियों को शिक्षक घर पर आकर पढाएँ ऐसी अपेक्षा रखते थे।

परिणाम के रूप में पाया गया कि शिक्षा से अपेक्षाओं का स्तर मुसहर अभिभावकों के शैक्षिक परिवेश के ऊपर निर्भर है। इस समुदाय में शिक्षा का स्तर निम्न है और यह समुदाय सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर है। इसलिए शिक्षा के प्रति इनकी ऊँची अपेक्षाएं नहीं है। जिस स्तर की ये अपेक्षाएं रखते है उसको प्राप्त करने में इनके सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति बाधा पहुंचाती है।

उद्देश्य 3- मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव

मुसहर विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभवों को जानने के लिए विद्यार्थियों से विद्यालय में उनका अनुभव, प्रार्थना सभा का अनुभव, पाठ्य विषय वस्तु के प्रति अनुभव, शिक्षकों के प्रति अनुभव, शैक्षिक

योजनाओं के प्रति अनुभव, सिखाने की गतिविधियों के प्रति अनुभव आदि की पहचान की गई जिसके परिणाम निम्नलिखित है-

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि मुसहर विद्यार्थी विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाएं, विद्यालयी कार्यक्रम, खेल, शैक्षिक योजनाओं आदि के प्रति अनुभव रखते थे। कुछ विद्यार्थियों के अनुभव अन्य विद्यार्थियों से अलग मिले। जिसमें एक छात्रा ने अपने साथी के वैवाहिक कार्यक्रम के अवसर पर घर पर आमंत्रित किये जाने के बारे में बताई। दो विद्यार्थियों ने शिक्षक के द्वारा हिंसात्मक और अभद्र व्यवहार के बारे में बताया। एक विद्यार्थी अपने विद्यालयी अनुभव में परिवार तथा विद्यालय के लिए बनती हुई मुसीबत के बारे में बताया जो इस प्रकार है- विद्यालय में पढ़ने के लिए शिक्षक, बच्चों को बुलाने के लिए उनके घर पर कभी-कभी आते हैं। एक बार शिक्षक (T10) लड़कों को बुलाने के लिए मुसहर बस्ती में आ रहे थे। उनको आते देखकर पवन, योगेन्द्र, संदीप (काल्पनिक नाम) और मैं घर से भागकर खेत में जाकर छिप गए। जो लड़के घर पर मिले शिक्षक उन्हें विद्यालय ले गये। हम सब खेत के रास्ते पैदल रिश्तेदारी के लिए चल दिए। हम लोग कहाँ चले गए इस बात की जानकारी विद्यालय तथा घर पर किसी को नहीं थी। कुछ समय बीतने के बाद जब लड़के स्कूल से घर आ गये, तब मेरे घर वाले (दादी) मुझे खोजने लगे। गांव में लोगों से पूछने पर किसी ने नहीं बताया, तब तक पवन और योगेन्द्र को भी उसके घर वाले खोजने लगे। धीरे-धीरे पूरे गांव में खबर फैल गई कि चार लड़के गावं से लापता है। गांव का एक लड़का बताया कि जब शिक्षक (T10) सुबह गांव में आ रहे थे तो यह सब उनकी डर से खेत की तरफ भाग रहे थे। इतना सुनते ही गांव के सभी लोग शिक्षक के घर पर पहुंच गए और वहां पुलिस भी आ गई थी। हम लोग पैदल चलते-चलते शादियाबाद पहुंच गए (घर से लगभग 8-10 किमी दूर)। फिर मुझे घर की चिंता होने लगी तब मैंने सभी से घर वापस चलने के लिए कहां लेकिन कोई वापस आने को तैयार नहीं हुआ। फिर मै अकेले वहां से घर के लिए चल दिया। घर पहुंच कर सारी बात बताई, तब रात में ही पुलिस उन लोगों को लाने के लिए रिश्तेदारी में गई और लेकर वापस आई। हम लोगों के वजह से सब लोग बहुत परेशान हुए, तब से घर पर बिना किसी को बताये कहीं नहीं जाते है।

अध्ययन के उपरांत पता चला कि विद्यालय की दिनचर्या प्रार्थना सभा से प्रारम्भ होती थी जिसमें विद्यार्थियो से वंदना, राष्ट्रगान, शारीरिक व्यायाम, सूचनाएं, विद्यार्थियों के ड्रेस चेकिंग जैसी क्रियाएँ की जाती थी। प्रार्थना सभा में होने वाली गतिविधियों से सभी मुसहर विद्यार्थी भिज्ञ थे। अध्ययन से पता चला

कि इन गतिविधियों में कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां के मुसहर विद्यार्थियो की भूमिका गौण थी। किसी भी दिन विद्यालय में एक भी मुसहर विद्यार्थी प्रार्थना कराते हुए नहीं मिले। ये विद्यार्थी प्रार्थना सभा की पंक्ति में पीछे खड़े होते थे (चित्र देखे A, B पेज सं. 224)। वहीं विद्यार्थी S18 के कथन को प्रमाण के रूप में मानते हुए यह कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर सभी विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करता था। प्रार्थना सभा में मुसहर विद्यार्थियों की अधिक सक्रियता और नियमित ड्रेस, शाररिक व्यायाम, समय पर उपस्थिति की पड़ताल की जाती थी। विद्यालय के कार्यक्रम बच्चों को अनुशासन का पालन करना सीखा रही थी जो उनके जीवन का हिस्सा बन रहा था। लेकिन कम्पोजिट विद्यालय में देखा गया कि मुसहर विद्यार्थी प्रार्थना सभा की पंक्ति में पीछे खड़े रहते थे और इस कार्यक्रम में इनकी सक्रियता बहुत कम रहती थी।

पाठ्य विषयवस्तु के प्रति मुसहर विद्यार्थियों के अनुभव के सन्दर्भ में पता चला कि सरकार की तरफ से मिलने वाले पाठ्य पुस्तकें समय से प्राप्त नहीं हुई और सभी पुस्तकें एक साथ नहीं मिली। विद्यालय के द्वारा पिछले वर्ष की पाठ्य पुस्तकें पुरातन छात्रों से लेकर विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी गई। कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां के उच्च प्राथमिक की कक्षाओं के लिए पर्याप्त संख्या में शिक्षक न होने के कारण दो कक्षाओं को सम्मिलित रूप से शिक्षण कार्यों का संचालन किया गया। परिवार में शिक्षा का आभाव होने के कारण मुसहर विद्यार्थी, विद्यालय की तरफ से मिलने वाला गृह कार्य को 'अभ्यास कार्य पुस्तिका' में पूरा करने में असफल थे।

शिक्षक-छात्र सम्बन्ध अधिगम को अधिक प्रभावित करता है। शिक्षक और मुसहर विद्यार्थियों का सम्बन्ध शैक्षिक गतिविधि तक सीमित था, आठ मुसहर विद्यार्थी ने बताया कि कक्षा में प्रश्न का सही जबाब देने, गृहकार्य पूरा करने, खेल में अच्छा प्रदर्शन करने आदि अवसरों पर शिक्षक का स्नेह प्राप्त होता था जबकि चार मुसहर विद्यार्थी जो कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां से सम्बन्ध रखते थे उनका कहना था कि शिक्षक के द्वारा किसी प्रकार का स्नेह नहीं प्राप्त होता था। विद्यालय अवलोकन के दौरान देखा गया कि उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर में किसी भी विद्यार्थी को घंटी लगाने, चाक-डस्टर और रजिस्टर लाने के कार्यालय में भेजना, पीने का पानी लाने के लिए भेजना और बाजार से कोई वस्तु लाने के लिए भेजना सामान्य बात थी। वहीं कम्पोजिट विद्यालय में अन्य विद्यार्थी बिना किसी रोक-टोक के कार्यालय कक्ष में प्रवेश कर ले रहे थे। वितरण के लिए रखी गई पाठ्य पुस्तक विद्यार्थी प्रधानाध्यापक की स्वीकृति के उपरांत

ले रहे थे लेकिन एक भी मुसहर विद्यार्थी कार्यालय में प्रवेश नहीं कर रह था। वे सहमे हुए दरवाजे पर खड़े होकर पुस्तक मांग रहे थे। इस विद्यालय में मध्याह्न भोजन के अवकाश के समय शिक्षक अलग-अलग कक्षाओं में आहार ग्रहण करते थे जिसमें शिक्षक T6 तथा T7 के आस-पास अक्सर विद्यार्थियों को देखा जाता था लेकिन उनमें एक भी मुसहर विद्यार्थी शामिल नहीं रहते थे। बोर्ड्यू, (1986) और एप्पल, (1983) ने अपने अध्ययन में कल्चरल कैपिटल के अंतर्गत समाज की प्रतिबिंबित संस्कृतियों, शिक्षा पर व्यय किये गए धन तथा समय के व्यय की बात की और इसमें छोटे समूहों की संस्कृतियों और सिद्धांतों के प्रतिनिधित्वों पर ध्यान केन्द्रित किया है। इनके सिद्धांतों के अनुसार भारतीय शिक्षा व्यवस्था से मुसहर समुदाय उपेक्षित प्रतीत होते हैं।

शैक्षिक योजनाओं के प्रति विद्यार्थियों के अनुभव के रूप में प्रशासन द्वारा मिलने वाली निःशुल्क पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को समय पर न मिलने पर विद्यालय द्वारा विद्यार्थीयों को पुरानी पुस्तकों को उपलब्ध कराया गया। छात्रवृति तथा ड्रेस के लिए मिलने वाले पैसे हेतु विद्यार्थियों का आधार कार्ड शिक्षकों द्वारा बनवाया गया। शिक्षकों और विद्यार्थियों की दृष्टि से ड्रेस के लिए अभिभावक को पैसा देने की नीति उचित नहीं थी। इस नीति से मुसहर समुदाय के विद्यार्थी के सम्मुख आने वाली समस्याएं- बैंक खाते से लेन-देन नहीं होने की दशा में खाते का बंद होना, बैंक खाते का आधार कार्ड से जुड़ा न होने के कारण उचित समय पर पैसे का न मिलना, ड्रेस के लिए पैसे कम पड़ जाना और अभिभावकों द्वारा ड्रेस का पैसा पारिवारिक कार्यों में खर्च कर लेना शामिल था।

अध्ययन से पता चला कि विद्यालय में शिक्षकों का शिक्षण कार्य के लिए बिना किसी प्रकार के पाठ्य योजना तैयार किए कक्षा में जाना दिनचर्या का हिस्सा था। विद्यार्थी प्रकरण को समझने से अधिक उत्तर पुस्तिका में लिखने पर अधिक सक्रिय रहते थे। विद्यार्थियों को ऐसा करने में कुछ शिक्षकों की सहमति दिखाई देती थी। कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां में शिक्षक शिक्षण के समय पर विद्यालयी अभिलेख (अभ्यास कार्य पुस्तिका, सूक्ष्म पाठ्य योजना को प्रेरणा पोर्टल ऐप पर अपलोड करना आदि) तैयार करते हुए मिले। विद्यालयी अभिलेख तैयार करने के लिए, शिक्षक एक से अधिक कक्षाओं को आपस में शामिल करके शिक्षण कार्य करते थे। कठिन प्रकरण जैसे- गणित विषय में 'परिमेय संख्या' तथा विज्ञान में 'जीवों में उत्सर्जन' आदि को समझने के लिए विद्यार्थियो को यूट्यूब ऐप पर वीडियो देखने की सलाह शिक्षक द्वारा दी गई। उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर के हिंदी विषय की शिक्षिका अपने शिक्षण कार्य में गीत

विधि का प्रयोग करती दिखी, विज्ञान के शिक्षक व्याख्यान और प्रायोगिक कार्य के माध्यम से शिक्षण कार्य करते थे। शेष अध्यापक व्यख्यान और प्रश्नोतरी विधि की सहायता से शिक्षण कार्य करते थे।

शिक्षक विद्यार्थियों को किस प्रकार से सिखाते है इसके प्रति सभी मुसहर विद्यार्थियों ने अपने अनुभव के श्यामपट्ट पर लिखकर समझाने को बताया। एक विद्यार्थी वाचन विधि से शिक्षण करने पर समझने में कठिनाई होती है उसके बारे में बताया। एक-एक विद्यार्थी अपने अनुभव में आलेख तथा प्रोजेक्ट कार्य के बारे में बताया। जेलमैन, & वाटरमैन, (2010) के अनुसार 'अभिभावकों की स्कूल में भागीदारी बच्चों के सकारात्मक परिणामों में योगदान करती है'।

उद्देश्य 4- मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभव

मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभवों को जानने के लिए- मुसहर विद्यार्थियों के मित्र तथा उनके साथ किसी कार्यक्रम प्रति अनुभव, मुसहर विद्यार्थियों का अपने समुदाय के प्रति अनुभव, अपने सामाजिक प्रथा और रीती-रिवाज के प्रति अनुभव, मुसहर समुदाय के प्रति अन्य समुदाय के व्यवहार के प्रति अनुभव, मुसहर समुदाय में व्याप्त मिथकीय विचार के प्रति अनुभव, जातीय पहचान का शैक्षिक परिवेश पर प्रभाव के प्रति अनुभव आदि की पहचान की गई है जिसके परिणाम निम्नलिखित है।

बच्चों के सामाजिक विकास में मित्र मण्डली की भूमिका अहम होती है जिस बच्चे का जितने भिन्न-भिन्न समाज के बच्चों के साथ लगाव रहता है उसके पास उतने समाज के प्रति अनुभव प्राप्त होने के स्रोत होते हैं। मुसहर विद्यार्थियों के मित्रों की पहचान के लिए उनके तीन मित्रों को वरीयता क्रम के आधार पर पहचान की गई और उसमें अन्य समुदाय से संबंध रखने वालें मित्रों को वर्गीकृत किया गया तो प्रणाम के रूप में ज्ञात हुआ कि अन्य समुदाय से संबंध रखने वाले मुसहर विद्यार्थियों की सख्यॉं गाँव अतिगावां की तुलना में शाहपुर बहोर राय के विद्यार्थियों की संख्या अधिक है। इसके पीछे कारण के रूप में गाँव शाहपुर बहोर राय में मुसहर समुदाय के साथ-साथ अन्य समुदाय के बसे (निवास) होने और विद्यालय में क्रिकेट खेलने, को पाया गया।

अध्ययन से पता चला कि अपने मित्र के साथ किसी कार्यक्रम में छ: मुसहर विद्यार्थियों को अपने मित्र के साथ किसी कार्यक्रम में जाने का अवसर नहीं मिला या नहीं गए। लेकिन जिन विद्यार्थियों ने किसी कार्यक्रम में भाग लिया था उनके पास कार्यक्रम का अनुभव तो था और वह उसी अनुभूति के साथ अनुभव को साझा करते हुए प्रसन्नचित दिखे। छात्र S4 अपने अनुभव में अन्य समुदाय के साथ मित्रता का आरंभ

ईट भट्ठे पर आलू भूनकर खाने को बताया। अन्य समुदाय के लड़कों के साथ मित्रता होने का एक आधार भट्ठे पर भोजन पकाने को देख। छात्रा S21 अपने कक्षा साथी को अपना घर दिखने के लिए ले आई थी। अपने अनुभव को साझा करते समय उसके चेहरे का भाव और आवाज में नीरसता देखी गई जब उसकी सखा ने यह कहा की तुमरा घर बहुत छोटा है। छात्रा S28 के पास बुफर सिस्टम में भोजन करना उसके जीवन का पहला अनुभव रहा। वही छात्रा S30 अपने पिता के जन्मदिन को मानाने की खुशी के साथ इच्छा व्यक्त की जब पिता जी आयेंगे तो फिर जन्मदिन मनायेंगे (लड़की के पिता सऊदी रहते थे)। परिणाम के रूप में ज्ञात हुआ कि गाँव शाहपुर बहोर राय के मुसहर विद्यार्थियों के पास गाँव अतिगावां के मुसहर विद्यार्थियों की तुलना में अन्य समुदाय के साथ कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर अधिक प्राप्त हुआ।

मुसहर विद्यार्थियों का अपने समुदाय के प्रति अनुभवों से ज्ञात हुआ कि इस समुदाय के लोगों की जीविका का मुख्य आधार मजदूरी थी। जिनके घर के लोग बाहर कमाते थे उनके घर का खर्च अच्छे से चल रहा था, दो लोग विदेश रहते थे तो उनकी स्थिति मुसहरों में अच्छी थी लेकिन जो घर पर रहकर मजदूरी करते थे उनकी स्थिति बहुत खराब थी। जिसको करने के लिए वह अपने समूह में जाते थे। जो लोग भट्ठे पर मजदूरी करते थे उनमें अधिकांशत लोग मदिरा का सेवन करते थे। इसलिए वह परिवार के लिए दो वक्त के भोजन की व्यवस्था करने तक सीमित थे। खाली समय में गाँव अतिगावां के अभिभावक घर पर पेड़ के नीचे बैठकर जुआ खेलते थे जिसका प्रभाव उनके बच्चो पर इस प्रकार पर पड़ रहा था कि मुसहर बच्चें भी पैसा (जुआ) खेलते थे और एक कक्षा-3 में पढ़ने वाला छात्र सुर्ती (तम्बाकू) खाना, गांजा पीना तथा चोरी करने जैसी घटनाओं में संलिप्त थी। इस प्रकार मुसहर विद्यार्थी अपने समुदाय से वह सभी गुण सीख ले रहे थे जो इस समुदाय में घटित हो रही थी। होरा, (2020) ने भी अपने अध्ययन में बताया कि 'ईट भट्ठे उन्हें छ: से सात माह के लिए सुनिश्चित आय के साथ इनके लिए अनुकूल विकल्प प्रदान करता है और कुछ पैसा आगामी भुगतान के रूप में देता है।

सामाजिक प्रथा और रीती-रिवाज के प्रति मुसहर विद्यार्थियों के अनुभवों से ज्ञात हुआ कि मुसहर समुदाय के लोग हिन्दू धर्म के रीति-रिवाज के अनुसार अपने उत्सवों को मानते थे। इनके धार्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों में दशहरा, दिवाली, होली तथा हिन्दू परम्परा के अनुसार शादी-विवाह शामिल थी। इस आधार पर कहा जा सकता है कि ये लोग हिन्दू धर्म को मानने वाले थे। वर्तमान समय में प्रत्येक समाज अपने समुदाय के महापुरुषों और अपने आराध्यदेव को एक सामाजिक चेतना के रूप में पूजते है। लेकिन

यह समुदाय अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति अभिज्ञ थे। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भोला मांझी, तिलका मांझी का योगदान गौरवशाली रहा है और दीना-भद्री की गाथा भारत के बिहार प्रान्त के साथ नेपाल तक फैली हुई है। जो इस समुदाय को एक प्रकार से सामाजिक चेतना के लिए एक जुट होने का अवसर प्रदान करता है। लेकिन यहाँ के मुसहरों में इस प्रकार के सामुदायिक कार्यक्रमों को मनाने का पूर्ण रूप से अभाव था। कुमार., & झा, (2023) के अनुसार ‘बिहार में मुसहर समुदाय दीना-भद्री को लोक देवता के रूप में पूजते है’।

अध्ययन से पता चला कि भारतीय संविधान में अस्पृश्यता निवारण जैसे प्रावधान होने के बावजूद समाज में अस्पृश्यता इनके साथ बहुत से जगहों पर देखने को मिली। मुसहर समुदाय के प्रति अन्य समुदाय के द्वारा किये गए व्यवहारों का मुसहर विद्यार्थियों के अनुभवों से ज्ञात हुआ कि मुसहर समुदाय के आवासीय परिवेश के पास रहने वाले अन्य समुदाय के लोगों का व्यवहार सकारात्मक देखने को मिला, किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। लेकिन उनके साथ कार्य स्थलों पर भेदभावपूर्ण किया गया। इनकी विवशता ऐसी रहती थी कि इनसे नाश्ते के बदले में इनसे घरेलु श्रम करा लिया गया। इनके श्रम का शोषण होता था, कृषि कार्य में आठ घंटे से अधिक कार्य इनसे लिए जाते थे। समय से मजदूरी नहीं दी जाती थी और अधिकांश मजदूरी के रूप में इन्हें अनाज मिलता था।

मुसहर समुदाय में व्याप्त मिथकीय विचार के प्रति विद्यार्थियों के अनुभवों से पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र के सभी मुसहर हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग थे और ये शक्ति (दुर्गा, काली और नगर के डीह) के उपासक थे अर्थात शक्ति की पूजा करने वाले थे यही कारण है कि इस समुदाय में पूजा-अर्चना में बलि देने की प्रथा आज भी विद्यमान है। अधिकांश लोग भूत-प्रेत में विश्वास रखते थे इसलिए कुछ लोग रोगों के निदान के लिए डॉक्टर और घरेलु उपचार के साथ-साथ ओझा-सोखा के पास जाते थे। अध्ययन के दौरान पाया गया कि कुत्ते के काटने पर प्राथमिक उपचार के रूप में सूखे मिर्च को पीसकर कटे हुए स्थान पर रखने का घरेलु उपचार किया और डॉक्टर के पास न जाकर झाड़-फूक के लिए पुजारी के पास गए। इस समुदाय में अनेक मिथ में यह भी एक मिथ्य है कि कुत्ते के काटने पर बघोल (एक गाँव) सर्प के काटने पर अमवा के सती माई (एक धार्मिक स्थल) बिच्छु के डंक मारने पर किसी तांत्रिक के पास जाते है। वंदना, (2013) ने भी अपने अधययन में बताया कि 89.2 प्रतिशत हिन्दू धर्म में विश्वास रखते है और अन्य धर्मो से इसे श्रेष्ट मानते है।

भारत में वंचित समुदायों को ध्यान में रखकर अनेक योजनाओं का क्रियान्वन हुआ लेकिन मुसहर समुदाय के शैक्षिक परिदृश्य में वांछित परिवर्तन लाने में वह असफल रही। अध्ययन क्षेत्र में इस समुदाय में जो व्यक्ति शिक्षा जिस भी स्तर तक प्राप्त की थी वह शिक्षा का प्रत्यक्ष लाभ नहीं ले पा रहे थे। जिसका प्रभाव उनके बच्चो पर पड़ रहा था। S4 और S17 के कथन- 'छोट जात को नौकरी नहीं मिलती इसलिए बहुत कम लोग पढ़ते है' और 'यह बात सबको पता है की मुसहर लोग की सरकारी नौकरी नहीं लगेगी इसलिए कोई पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते है' जब इस तरह के कथन समाज के द्वारा बच्चे को सुनने को मिलता है तो शिक्षा के प्रति उनके मन ने नीरसता उत्पन्न होती है।

उद्देश्य 5- मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधि में भागीदारी और उसकी गुणवत्ता

मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधि में भागीदारी और उसकी गुणवत्ता को जानने के लिए विद्यालय में संचालित होने वाले कार्यक्रमों में मीना कैबिनेट गठन की प्रक्रिया, मीना मंच, बालसभा, प्रार्थना सभा, खेल-कूद और प्रतियोगिता आदि कार्यक्रमों का अध्ययन किया गया जिसके परिणाम निम्नलिखित है-

अध्ययन से पता चलता है कि कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां में मीना कैबिनेट का गठन किया गया। कैबिनेट गठन की प्रक्रिया में कक्षा- 4 से 8 तक के विद्यार्थियों को शामिल किया गया। उच्च प्राथमिक स्तर पर कुल 63 विद्यार्थी नामांकित थे जिसमे 29 छात्र तथा 34 छात्राएं थी। मीना कैबिनेट में अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष, प्रेरक/पावर एंजिल, सक्रिय सदस्य तथा सदस्य के रूप कुल 21 विद्यार्थियों को उपरोक्त पदों पर नामित किया गया। इस विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर पर कुल 18 (11 छात्रा तथा 7 छात्र) मुसहर विद्यार्थी नामांकित थे लेकिन किसी भी मुसहर विद्यार्थी को किसी भी पद के लिए नामित नहीं किया गया। मीना सुगमकर्ता कहती है कि- मै प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका हूँ। मीना मंच कार्यक्रम में मुख्य भूमिका प्रेरक/पावर एंजिल का होता है। कार्यक्रम के लिए कौन सी लड़की योग्य है यह उच्च प्राथमिक के शिक्षक अच्छे से जानते है और पहले शिक्षक (T6) यह कार्यक्रम करवाते थे। इसलिए शिक्षक ने जो लिस्ट बनाई उसी के आधार पर पदों का आबंटन कर दिया गया। मीना मंच का कार्यक्रम मै देखती हूँ। जब पता किया गया कि 'मीना कैबिनेट के गठन में एक भी मुसहर विद्यार्थी क्यों नहीं है? तो शिक्षक (T6) का कहना था कि मीना कैबिनेट के गठन में यह बच्चें (मुसहर विद्यार्थी) छूट रहे हैं इसका ख्याल (ध्यान) बिलकुल ही नहीं रहा। (दबी हुई आवाज में) वैसे भी यह बच्चे विद्यालय आ रहे हैं यही बहुत बड़ी बात है। कैबिनेट में

विद्यार्थियों की सक्रियता तथा नियमित उपस्थिति को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों का चयन किया गया। झा, (2021). ने भी अपने अध्ययन में बताया कि मुसहर 12 प्रतिशत प्राथमिक स्तर, 7 प्रतिशत उच्च प्राथमिक तथा चार प्रतिशत मैट्रिक (10वीं) तक पढ़े है। मुसहर समुदाय में उच्च निरक्षरता के पीछे का कारण जातिगत भेदभाव को बताया है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर में मीना कैबिनेट के गठन के लिए विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को विद्यालय के प्रांगण में एकत्र किया गया जिसमें विद्यालय के सभी विद्यार्थी शामिल हुए। मीना कैबिनेट गठन की प्रक्रिया विद्यालय के प्रधानाध्यापक तथा मीना सुगमकर्ता के द्वारा लोकतांत्रिक प्रक्रिया से की गई। इस विद्यालय में कुल 86 विद्यार्थी (36 बालक तथा 50 बालिकाएं) थे जिसमें से 14 विद्यार्थी (4 बालिकाएं तथा 10 बालक) मुसहर समुदाय के नामांकित थे। मीना कैबिनेट में कुल 23 विद्यार्थियों को विभिन्न पदों पर नियुक्त किया गया जिसमें से तीन मुसहर विद्यार्थी सदस्य के रूप में नियुक्त किए गए।

अध्ययन से यह पता चलता है कि कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां में मीना मंच कार्यक्रम सप्ताह के प्रत्येक शनिवार के दिन द्वितीय पाली में मीना सुगमकर्ता के द्वारा संचालित होता था। इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को जागरूक करने तथा गायन तथा अभिनय करने के कौशलों को सिखाया गया। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों में उत्साह को बढ़ावा दे रहा था उनकी प्रतिभाओं को निखार रही थी तथा साहित्य के प्रति उनके रुझानों को बढ़ावा मिल रहा था। लेकिन विद्यालय में कुछ शिक्षक के लापरवाही के कारण कुछ विद्यार्थियों में वांछित परिणाम नहीं प्राप्त हुए। सभी कार्यकर्मो में देखा गया कि विद्यार्थियों को बैठने की उचित व्यवस्था नहीं रहती थी जिससे विद्यार्थियों को बैठने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। कार्यक्रम में स्वयं की जिज्ञासा के अभाव में मुसहर विद्यार्थी अधिकांश दिनों इस गतिविधियों से पूरी तरह से वंचित रह गए। जो विद्यार्थी अपनी उत्सुकता के साथ शिक्षक के पास स्वयं आते थे उन्हें कार्यक्रम में अधिक अवसर प्राप्त हुए। मुसहर विद्यार्थी हमेशा डरे तथा सहमे हुए थे। जिसके लिए कारण के रूप में शिक्षक-मुसहर विद्यार्थी के मध्य उचित सम्बन्धो का अभाव था। शिक्षक की ऐसी धारणा थी कि सामान्य आवाज का प्रयोग करने पर मुसहर विधार्थियों के लिए प्रभावहीन रहता है इसलिए उनके साथ ऊँची आवाज का प्रयोग करती थी। इस तरह के कार्यक्रमों में उन्हें किसी प्रकार का प्रोत्साहन न मिलने के कारण वे परिधि पर थे।

अध्ययन से पता चला कि उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर में मीना मंच कार्यक्रम सप्ताह के प्रत्येक शनिवार के दिन द्वितीय पाली में मीना सुगमकर्ता के द्वारा संचालित होता था। इस कार्यक्रम के

अंतर्गत स्कूल चलो अभियान, रंगोली प्रतियोगिता, मेंहदी प्रतियोगिता गुड टच तथा बैड टच आदि शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से आपसी सहयोग के भाव, समूह को नेतृत्व करने, रचनात्मकता का विकास, वाचन तथा गायन आदि कौशलो को सिखाया गया। शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की इच्छा शक्ति तथा तत्परता के कारण ही विद्यालय में होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम व्यवस्थित तथा गुणवत्तापूर्ण सफल होते थे। कुछ शैक्षिक गतिविधियाँ जैसे मेंहदी प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता में आने वाले खर्च विद्यार्थियों के द्वारा पूरा वहन न कर पाने की स्थिति में विद्यालय के शिक्षकों को व्यक्तिगत स्तर से पूरा करते हुए पाया गया। परिणाम के रूप में यह कहा जा सकता है कि विद्यालय में होने वाली शैक्षिक गतिविधि में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता को सुनिश्चित करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में अपनी अहम भूमिका को अदा किया।

अध्ययन से पता चलता है कि विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास के रूप में विद्यालय में खेल-कूद गतिविधियों का आयोजन होता था। बेसिक शिक्षा परिषद- उत्तर प्रदेश द्वारा वार्षिक खेल प्रतियोगता का आयोजन किया गया। वार्षिक खेल प्रतियोगिता के रूप में कबड्डी, खोखो, 600 मीटर, 400 मीटर 100 मीटर की अलग-अलग दौड़, ऊँची कूद, लम्बी कूद, भाला फेंक, गोला फेंक आदि विद्यार्थियों के लिए विद्यालय स्तर, न्याय पंचायत स्तर, ब्लॉक स्तर, जिला स्तर तथा मंडल स्तर पर आयोजित किया था। जिसमे कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां के उच्च प्राथमिक की कक्षाओं से अन्य विद्यार्थी तथा नौ मुसहर विद्यार्थियों ने विद्यालय में होने वाले विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभाग किया। विद्यालय में खेल गतिविधि नियमित तथा उचित व्यवस्था के साथ संचालित नहीं होने के कारण विद्यार्थी खेल प्रतिस्पर्धा में पूर्ण रूप से दक्ष नहीं हो सके। इस कारण ब्लॉक स्तर पर खो-खो खेल में यह विद्यालय अपना स्थान बना पाने में असफल हुए। शेष खेलों में न्याय पंचायत स्तर पर अपनी पहचान बना पाने में असफल हुए। खेल में विद्यार्थियों की असफलताओं के लिये सतत तथा नियमबद्ध तरीके से खेल अभ्यास का अभाव तथा नकारात्मक दंड देने को जिम्मेदार पाया गया।

उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर में होने वाले शैक्षिक गतिविधियों में मुसहर विद्यार्थियों की सहभागिता तथा उसकी गुणवत्ता संतोषजनक थी। विद्यालय के तरफ से जिला स्तर पर 400 मीटर की दौड़ में प्रतिभाग करने वाले एक मुसहर विद्यार्थी के रूप में S23 को देखा गया। जो इस समुदाय तथा विद्यालय के लिए गौरव का पात्र बना और ब्लॉक स्तर पर मुसहर विद्यार्थी के रूप में S31 को देखा गया जो कबड्डी तथा खो-खो खेल में जीत हाशिल की थी।

अध्ययन से पता चलता है कि दोनों विद्यालय के कक्षा-6 में 'शब्द पहेली' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमे विद्यार्थियों को दो समूहों (अन्य विद्यार्थी तथा मुसहर विद्यार्थी) में रखा गया। परिणाम के रूप में उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर के अन्य विद्यार्थियों को 52 प्रतिशत अंक तथा मुसहर विद्यार्थियों को 48 प्रतिशत अंक प्राप्त हुआ। प्राप्त औसत परिणाम के आधार पर पाई चार्ट तैयार किया गया जिससे पता चला कि शब्द पहेली में मुसहर विद्यार्थियों की उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों की तुलना में कम थी। कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां के अन्य विद्यार्थियों को 55 प्रतिशत अंक तथा मुसहर विद्यार्थियों को 45 प्रतिशत अंक प्राप्त हुआ। प्राप्त प्रतिशत परिणाम के आधार पर पाई चार्ट तैयार किया गया जिससे पता चला कि शब्द पहेली में मुसहर विद्यार्थियों की उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों की तुलना में कम थी।

अध्ययन के दौरान दोनों विद्यालय के कक्षा-7 में 'आओ रंग भरें' प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें विद्यार्थियों को दो समूहों (अन्य विद्यार्थी तथा मुसहर विद्यार्थी) में रखा गया। परिणाम के रूप में उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर के अन्य विद्यार्थियों तथा मुसहर विद्यार्थियों को 50-50 प्रतिशत अंक मिले। इस प्रकार प्राप्त परिणाम के आधार पर पाई चार्ट तैयार किया गया। जिससे पता चला कि 'आओ रंग भरे' पहेली में उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर के मुसहर विद्यार्थियों तथा अन्य विद्यार्थियों की उपलब्धि आपस में लगभग समान थी। कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां के अन्य विद्यार्थियों को 56 प्रतिशत तथा मुसहर विद्यार्थियों को 44 प्रतिशत अंक प्राप्त हुआ। इस प्रकार प्राप्त परिणाम के आधार पर पाई चार्ट तैयार किया गया जिससे पता चला कि आओ रंग भरे पहेली में कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां के मुसहर विद्यार्थियों की उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों की उपलब्धि से कम थी।

अध्ययन से पता चला कि उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर के कक्षा-8 में 'चलो, आकृतियों का सुडोकू बनायें' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमे विद्यार्थियों को दो समूहों (अन्य विद्यार्थी तथा मुसहर विद्यार्थी) में रखा गया। जिसमें अन्य विद्यार्थियों को 47 प्रतिशत तथा मुसहर विद्यार्थियों को 53 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए। इस प्रकार प्राप्त परिणाम के आधार पर पाई चार्ट तैयार किया गया। जिससे पता चला कि 'आओ रंग भरे पहेली' में उच्च प्राथमिक विद्यालय कुदनीपुर के मुसहर विद्यार्थियों की उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों की उपलब्धि से अधिक थी। कम्पोजिट विद्यालय अतिगावां के कक्षा-8 में कुल दस विद्यार्थी नामांकित थे जिसमे तीन मुसहर विद्यार्थी के रूप में छात्राएँ शामिल थी। जिसमें से दो छात्राओं

की शादी हो जाने के कारण तथा एक छात्रा का अपने अभिभावक के साथ बाहर रहने के कारण वह प्रतियोगिता में शामिल नहीं हो पाई।

उदेश्य 6- मुसहर समुदाय की शिक्षा की सरकारी योजनाओं के प्रति भिज्ञता

शिक्षा की सरकारी योजनाओं के प्रति मुसहर समुदाय की भिज्ञता जानने के लिए शिक्षा की सरकारी योजनाओं के प्रति भिज्ञता की सूची बनाई गई, शिक्षा की सरकारी योजनाओं की जानकारी के स्रोत की पहचान की गई, ग्राम पंचायत स्तर पर शिक्षा की सरकारी योजनाओं को कार्य करने वाली संस्थाओं और मुसहर समुदाय के मध्य संबंधों की पहचान की गई, संचार माध्यमों (टेलीविजन तथा मोबाईल) का उपयोग किये जाने वाले क्षेत्रों की पहचान की गई जिसके परिणाम निम्नलिखित है-

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शिक्षा की सरकारी योजनाओं के प्रति कुल 30 मुसहर अभिभावकों में से 21 अभिभावक शिक्षा की सरकारी योजनाओं से अवगत थे। जिसमे समग्र शिक्षा अभियान के बारे में 3, मिड-डे मील के बारे में 17, शिक्षा का अधिकार के बारे में 5, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के बारे में 1 और अन्य शैक्षिक योजना (नवोदय विद्यालय, लैपटॉप, कन्या विद्याधन, साईकिल) के बारे में 3 मुसहर अभिभावक भिज्ञ थे। इन शैक्षिक योजनाओं के बारे में विद्यालय से 8, पास-पड़ोस तथा मित्र से 9, टी. वी. तथा समाचार पत्र से 2 तथा ग्राम पंचायत सदस्य से 4 अभिभावकों को जानकारियाँ मिली। थॉमस, (2018) ने भी अपने अध्ययन में बताया कि 'सरकारी कल्याणकारी कार्यक्रमों का मुसहरों पर कोई प्रभाव नही होता, क्योंकि इन योजनाओं से मिलने वाले लाभों से ये अनभिज्ञ है'।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ग्राम पंचायत स्तर पर शिक्षा की सरकारी योजनाओं के प्रति कार्य करने वाली संस्थाओं के बारे में मात्र एक अभिभावक (P19) को जानकारी थी तथा तीन अभिभावकों ने शिक्षा की सरकारी योजनाओं को कार्य करने वाली संस्था के रूप में विद्यालय को बताया। गाँव के विकास के लिए ग्राम पंचायत समिति के सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। सरकारी शैक्षिक योजनाओं के क्रियान्वयन में इनकी भूमिका सक्रिय रहती है। गाँव अतिगावां और शाहपुर बहोरा के कुल 30 मुसहर अभिभावकों में 17 अभिभावक पंचायत सहायक के बारे में जानकारी रखते थे। उनके कार्य के बारे में छ: अभिभावकों ने बताया जिसमें तीन अभिभावकों ने अगंबाड़ी के बारे में और तीन अभिभावकों के पास पंचायत सहायक कार्य के बारे में जानकारी थी। पुष्पा, (2016) ने भी अपने अध्ययन में बताया कि 'सरकारी योजनाओं का लाभ इन्हें बहुत कम मिल पता है। सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं की जानकारी

इनको बहुत कम होती है शिक्षा में इनकी रूचि नहीं होती है और अभिभावक भी बच्चों पर ध्यान नहीं देते। जिससें बच्चे बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते है'।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कुल 30 मुसहर अभिभावकों में से 12 मुसहर अभिभावक मल्टीमिडिया मोबाइल का उपयोग करते थे। जिसमें 12 अभिभावक बात करने और सात अभिभावक बात करने के साथ-साथ वीडियो देखने में मल्टीमिडिया मोबाइल का उपयोग करते थे। जिसमे पांच अभिभावक बात करने के साथ-साथ वीडियो गाना देखने के लिए, चार अभिभावक बात करने के साथ-साथ फिल्म देखने, दो अभिभावक बात करने के साथ-साथ व्हाटसऐप और एक अभिभावक बात करने के साथ-साथ समाचार देखते थे। शिक्षा की सरकारी योजनाओं को इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के रूप में कार्य करने वाले मोबाइल फ़ोन से मुसहर अभिभावक वंचित थे। इस प्रकार इलेक्ट्रानिक मिडिया के माध्यम से मिलने वाली योजनाओं की जानकारी से मुसहर अभिभावक वंचित थे और मोबाइल का उपयोग संचार तथा मनोरंजन के साधन तक सीमित थे। अर्चना, (2018) ने अपने अध्ययन बताया कि 'प्राथमिक शिक्षा से जुड़ी कुछ योजनाएं मुसहर समुदाय के विकास के लिए सहायक है लेकिन उच्च शिक्षा की पहुँच और विकास की पहुँच से यह समुदाय बाहर है'।

उद्देश्य 7- मुसहर समुदाय की शैक्षिक समाजीकरण की प्रक्रिया

मुसहर समुदाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक समाजीकरण की प्रक्रिया को जानने के लिए समाजमिति मैट्रिक्स, विद्यालय में सामूहिक कार्यक्रमों में मुसहर विद्यार्थियों की स्थिति तथा इकोलॉजी थ्योरी ऑफ ब्रोंफेंब्रेनेर के सिद्धांतो का प्रयोग किया गया जिसके परिणाम निम्नलिखित है-

अध्ययन से पता चला कि कंपोजिट विद्यालय अतिगावां के विद्यार्थियों की कक्षागत लोकप्रियता में कक्षा-6 में सबसे अधिक प्राथमिकता अन्य समुदाय के विद्यार्थियों को प्राप्त हुई, जिसको कुल प्राथमिकता के रूप में 6 वरीयताएं प्राप्त हुई, वही कक्षा में मुसहर समुदाय के 6 विद्यार्थी थे, सभी विद्यार्थियों को अधिकतम 3 प्राथमिकताएं प्राप्त हुई जिसमें एक विद्यार्थी को सभी प्राथमिकताएं अन्य समुदाय के द्वारा प्राप्त हुई।

कक्षा-7 में सबसे अधिक प्राथमिकता के रूप में अन्य समुदाय के विद्यार्थियों (P) को 5 वरीयताएं प्राप्त हुई, वही मुसहर समुदाय के 4 विद्यार्थियों को अधिकतम प्राथमिकताओं के रूप में 3 वरीयताएं प्राप्त हुई, जिसमें एक विद्यार्थी (U) को एक वरीयता अन्य समुदाय के विद्यार्थी से प्राप्त हुई।

कक्षा-8 में कुल 10 विद्यार्थी थे जिसमें सबसे अधिक लोकप्रियता अन्य समुदाय के विद्यार्थी (G) को प्राप्त हुई, जिसको कुल प्राथमिकता के रूप में 5 वरीयता प्राप्त हुई, वही कक्षा में तीन छात्रा मुसहर समुदाय से थी जिसमें एक छात्रा (C) को एक वरीयता प्राप्त हुई।

परिणाम के रूप में पाया गया कि कंपोजिट विद्यालय अतिगावां के मुसहर विद्यार्थियों का विद्यालय में समाजीकरण निम्न स्तर की थी।

उच्च प्राथमिक विद्यालय कूदनीपुर के विद्यार्थियों की कक्षागत लोकप्रियता में कक्षा- 6 में कुल 30 विद्यार्थी थे जिसमें चार विद्यार्थी मुसहर समुदाय के थे। कक्षा में अन्य समुदाय के एक विद्यार्थी (I) को सबसे अधिक कुल 6 वरीयता प्राप्त हुई, वहीं मुसहर विद्यार्थी में ($) को अधिकतम 3 वरीयता प्राप्त हुई, जिसमें अन्य समुदाय के 2 वरीयता शामिल थी।

कक्षा-7 में 37 विद्यार्थी थे, जिसमें 22 बालिकाएं और 15 बालक थे। मुसहर समुदाय के एक छात्रा तथा छः छात्र थे। अन्य समुदाय के विद्यार्थी को अधिकतम प्राथमिकता के रूप में 5 वरीयता प्राप्त हुई। वहीं मुसहर समुदाय के 2 विद्यार्थियों को अधिकतम कुल प्राथमिकता के रूप में चार-चार वरीयताएं प्राप्त हुई, जिसमें एक विद्यार्थी (*) को दो वरीयता अन्य समुदाय के विद्यार्थी से प्राप्त हुई।

कक्षा-8 में कुल 19 विद्यार्थी थे जिसमे 11 बालिकाएँ तथा आठ बालक थे। कक्षा में अधिक लोकप्रियता अन्य समुदाय के विद्यार्थी (K) को प्राप्त हुई, जिसको कुल प्राथमिकता के रूप में 7 वरीयता प्राप्त हुई, वही कक्षा में कुल तीन विद्यार्थी मुसहर समुदाय के थे, जिसमें विद्यार्थी(M) को कुल प्राथमिकता के रूप में अधिकतम 4 वरीयता प्राप्त हुई, जिसमें 3 वरीयताएं अन्य समुदाय के विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त हुई।

परिणाम के रूप में पाया गया कि उच्च प्राथमिक विद्यालय कूदनीपुर के मुसहर विद्यार्थियों तथा अन्य विद्यार्थियों के समाजीकरण में कोई भिन्नता नहीं थी।

विद्यालय और मुसहर विद्यार्थियों के मध्य संबंधों को देखा जाए तो कंपोजिट विद्यालय अतिगावां के विद्यार्थी अपने साथी समूह के साथ विद्यालय जाना अधिक पसंद करते थे। उनकी विद्यालय जाने में अनियमितता रहती थी, जिसके पीछे उनकी पारिवारिक समस्या के रूप में अभिभावकों की घर पर अनुपस्थिति, घर और छोटे भाईयों की देख-रेख और भट्ठे पर दिहाड़ी मजदूरी करना आदि समस्याएं शामिल थी। अन्य समुदाय के कुछ विद्यार्थियों से मध्याह्न भोजन (MDM) नहीं करने के कारणों को जानने पर पता चला कि MDM की गुणवत्ता और थाली की सफाई ठीक से न होने के कारण वे भोजन नहीं करते थे। ब्रिंट, (2001) ने अपने अध्ययन में बताया कि 'समाजीकरण सन्देश विद्यालय में शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग सन्देश दिए जाते है। यह सन्देश शिक्षक के द्वारा शुरू की गई बात-चीत के माध्यम से, कक्षा के नियमों के मध्ययम से और स्कूल व्यापी कार्यक्रमों के मध्ययम से दिए जाते है। जिससे विद्यार्थी नियमबद्धता, कड़ी मेहनत, दूसरे के प्रति सम्मान और सक्रिय भागीदारी को सीखते है'।

उच्च प्राथमिक विद्यालय कूदनीपुर, मुसहर समुदाय के मध्य स्थित होने के कारण उसका उनके बच्चों पर प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई दिया। शिक्षकों का औपचारिक और अनौपचारिक रूप से मुसहर अभिभावकों से मिलना हो जाता था। कुछ पारिवारिक कार्यों को विद्यार्थी विद्यालय में रहकर देख-रेख कर लेते थे जिससे उनकी उपस्थिति विद्यालय में नियमित रहती थी। उल्लेखनीय है कि इस गांव में भट्ठा मजदूरों की संख्या अतिगावां की तुलना में कम थी और आंगनबाड़ी शिक्षिका होने का लाभ इस समुदाय के बच्चों को मिलता था।

इस प्रकार परिणाम के रूप में यह पाया गया की गाँव अतिगावां के मुसहर विद्यार्थियों का शैक्षिक समाजीकरण पूर्ण रूप से नहीं हो पा रही थी और शाहपुर बहोर राय के मुसहर विद्यार्थियों का शैक्षिक समाजीकरण समान रूप से हो रही थी। बर्टन, (2006) ने अपने अध्ययन में बताया कि 'निम्न ग्रेड प्राप्त करना, बार-बार अनुपस्थित रहना और स्कूल बदलना बच्चे के सीखने को प्रभावित करता है और बच्चे स्कूल छोड़ देते है। स्कूल में निम्न ग्रेड प्राप्त करना, बार-बार अनुपस्थित रहना, स्कूल बदलने के लिए सामाजिक आर्थिक विशेषताएं (परिवार की आय, शिक्षा और व्यवसाय) जिम्मेदार है'। यह सभी विशेषताएं मुसहर समुदाय से अंतरसंबंधित है।

मुसहर समुदाय की संस्कृति और सामाजिक कारक मुसहर विद्यार्थियों की शैक्षिक समाजीकरण को प्रभावित कर रही थी। इस समुदाय की गरीबी आमतौर पर इनके बच्चों की परवरीश के समय से उन्हें सीमित संसाधन में ही जीवनयापन करने और अपनी इच्छाओं को सीमित रखने के लिए विवश रहते थे। इस समुदाय के दैनिक कार्य पूर्व निर्धारित रहते थे। उसमें किसी प्रकार का बदलाव करना ये उचित नहीं समझते। प्रतिदिन सुबह दैनिक क्रिया करने के उपरांत ईट बनाने या अन्य मजदूरी के कार्यों में लग जाते थे। इस समुदाय के सभी कार्य दोहराव वाले कार्य होते थे जिसके लिए नियमबद्धता और उसकें अनुरूप होने की क्षमता विकसित होती है। इनके घर का चूल्हा शाम को जलेंगे या नहीं यह उस दिन के मजदूरी पर निर्भर करता था। इस कारण यह समुदाय अपनी दैनिक मजदूरी से इतर कुछ सोचन नहीं पाता। इस प्रकार इस समुदाय में नवीन कार्यो के लिए रचनात्मकता का पूर्ण रूप अभाव देखने को मिला।

1.15 शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन निम्नलिखित वर्गों के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

I. **शोधकर्ता के लिए-** प्रस्तुत शोध कार्य का परिणाम उन शोधार्थियों के अध्ययन के लिए सिद्ध हो सकता है जो मुसहर समुदाय को लेकर शोध कार्य करना चाहते है।

प्रस्तुत शोध कार्य उन शोधार्थियों के अध्ययन के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है जो शैक्षिक समाजीकरण को लेकर शोध कार्य करना चाहते है।

II. **शिक्षकों के लिए-** प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षकों के लिए सहायक हो सकता है क्योंकि इस शोध के परिणाम यह बताते है कि शिक्षक के सामान्य कार्य शैली से मुसहर विद्यार्थियों का वांछित विकास नहीं हो पा रहा है उनके लिए कुछ अलग से विशेष करने की आवश्यकता है। शिक्षक सामान्य शिक्षा दर्शन तथा मनोविज्ञान शिक्षण विधि के साथ-साथ शैक्षिक समाजशास्त्र के अनुसार शिक्षण विधि का प्रयोग कर सकते हैं।

III. **अभिभावकों के लिए-** प्रस्तुत शोध अभिभावकों के लिए के लिए भी हो सकता है जब जब अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक होगे तभी वे अपने बच्चों की शिक्षा में मदद कर पायेंगे।

IV. **शैक्षिक नीतिकारों के लिए-** प्रस्तुत शोध कार्य शैक्षिक योजनाकारों के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है, वे शिक्षा में पिछड़े समुदायों के लिए कोई नीति निर्माण और शैक्षिक योजना का निर्माण और उसकी जानकारी इन तक पहुँचाने का कार्य कर सकते है जिससें शिक्षा से वंचित समुदाय मुख्यधारा में आ सकें।

V. **पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए-** प्रस्तुत शोध पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए इस रूप में मदद कर सकेगी। पाठ्यक्रम का निर्धारण समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाए, पाठ्यक्रम विकसित तथा उदार हो जिससे कि इस समुदाय के महान विभूतियों के पाठ्यक्रम में स्थान मिल सके। पाठ्यक्रम में कुछ ऐसे कार्यक्रम को स्थान दिया जाए अध्येता श्रम के महत्त्व को समझ सकें और अपनी समस्याओं को स्वयं के प्रयत्नों से दूर करने की योग्यता विकसित कर सकें।

VI. **विद्यालय प्रबंधकों के लिए-** प्रस्तुत शोध शिक्षण संस्थान के प्रबंधकों के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है, क्योंकि अध्ययन से पता चलता है की कुछ मुसहर विद्यार्थियों की विद्यालय में लम्बे समय तक अनुपस्थित रहते है जिससें उनका विकास सामान्य बच्चों की तरह नहीं हो पा रहा है। ऐसे बच्चों की शिक्षा के लिए प्रबंध करने का प्रयास कर सकते है।

1.16 भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव

शोध कार्य अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी शोधार्थी के लिए किसी समुदाय के सभी पक्षों को केंद्र में रखकर शोध कार्य करना संभव नहीं है। इस अध्ययन में मुसहर समुदाय की शिक्षा को केंद में रखकर उनके दशा, दिशा और कारण को लेकर अध्ययन किया गया है। इस समुदाय को लेकर अन्य पक्षों को केंद्र में रखकर शोधकार्य किया जा सकता है। इस समुदाय को लेकर इंटरवेंशन प्रोग्राम के साथ शोध कार्य किया जा सकता है। मुसहरों की समस्या की जड़ अज्ञानता और अभिज्ञता है इसलिए उन्हें शिक्षित करने का कार्य व्यापक स्तर पर किया जा सकता है।